SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

चर्चित उपन्यासों में स्त्री का संघर्ष

आरती बोरकर, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
शासकीय दाऊ कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
आरती बोरकर, (Ph.D.), हिंदी विभाग
शासकीय दाऊ कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/06/2021
Revised on : -----
Accepted on : 19/06/2021
Plagiarism : 02% on 12/06/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Saturday, June 12, 2021
Statistics: 18 words Plagiarized / 1197 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

pfp7r milJ;klksa esa l =h dk la?k"k7 ekuo thou vusd ?kVukvksa la?k"kks7 dh xkFkk gSA ekuo & tUe ls ysdj e`R;q rd vusd la?k"kksZ ls tw>rk jgrk gSA Hkksafrd izfrLi/kkZ ds bl ;qx esa Lo;a dks LFkkfir djus ds fy, L=h ukuk izdkj ds 'kkjhfjd ,oa ekufld la?k"kZ dks Hkksxrh gSA oSKkuhd ,oa vkS|ksfxd fodkl ds bl nkSj esa Hkkjrh; lekt dk gj {ks=] la?k"kZ] dq.Bk] ruko] volkn] ?kqVu&ihM+k] la=kl] vkdzks'k] fonzksg ds Hkko ns[ks tk ldrs gSA ekuo thor ewY; u;s ifjos'k o okrkoj.k

शोध सार

मानव जीवन अनेक घटनाओं संघर्षो की गाथा है। मानव–जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक संघर्षो से जूझता रहता है। भौतिक प्रतिस्पर्धा के इस युग में स्वयं को स्थापित करने के लिए स्त्री नाना प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक संघर्ष को भोगती है। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक विकास के इस दौर में भारतीय समाज का हर क्षेत्र, संघर्ष, कुण्ठा, तनाव, अवसाद, घुटन–पीड़ा, संत्रास, आक्रोश, विद्रोह के भाव देखे जा सकते है। मानव जीवन मूल्य नये परिवेश व वातावरण में संस्कृति एवं नैतिकता के नूतन मूल्यों के साथ उभरती है। इनका प्रभाव न केवल उच्च वर्ण बल्कि मध्य एवं निम्न वर्ग भी पूरी तरह से आ चुका है, जिन्हें हम सहित्य में किसी न किसी रुप में देख लेते है। सामान्य द्वन्द और विशिष्ट द्वन्द हमें रोज कई रुपों में दिखाई देता है। व्यक्ति हर दिन संघर्ष करता है अपने परिस्थिति से लड़ता व जूझता है, कई बार तो हार जाता है किंतु टूटता नहीं नहीं है। वह फिर से संघर्ष यात्रा प्रारंभ करता है, जूझता है, लड़ता है, तब तक नहीं रुकता जब तक उसे संतोषजनक परिस्थियाँ न प्राप्त हो जाये।

मुख्य शब्द

संघर्ष, स्त्री, मानव जीवन, द्वन्द.

हर आदमी अपने आप में विशिष्ट है, किंतु उनकी यह विशिष्टता उनके कार्य में दिखाई देने लगती है अर्थात् जब वह अपने निजी जीवन में भी ऐसे प्रयोग करना चाहता है जो अन्य लोगो से उसे बिल्कुल अलग करता हो, यही अलगाव ही, मावन को दूर तक का सफर करने को मजबूर करती है। इसीं अलगाव का परिणाम सामंती समाज में लड़तें हुए ही व्यक्ति ने अपनी विशिष्टताएँ स्थापित की है और इतने बड़े समूह में अकेले खड़े रहने का साहस दिखाया है। चर्चित उपन्यासों में आदमी का

संघर्ष अलग–अलग परिस्थितियों को बतलाता है। रचनात्मकता में व्यक्ति और समिष्ट का संघर्ष मात्र आंतरिक नहीं होता। वह आन्तरिक परिवेश से व्यवहारिक जीवन को प्रभावित करता है। प्रत्येक उपन्यासकार अपने उपन्यास में स्त्री की दशा व संघर्ष को बतलाया है। राजेंद यादव ने सारा आकाश में मध्यवर्गीय परिवार में नव वधुओं को दी जाने वाली यातना का चित्रण किया है।

सातवें दशक में शैलेश मटियानी ने चौथी मुट्ठी मुख, सरोवर के हंस, एक मूठ सरसों, आदि उपन्यासों मे पहाड़ी अंचल की स्त्री की पीड़ा को बहुत ही मार्मिक रुप में चित्रण किया है। स्त्री का देह शोषण केवल उसका पति नहीं करता बल्कि धर्म रक्षा के ठेकेदार और असामाजिक तत्व भी करते है।

"गोदान" में प्रेमचंद ने धनिया के माध्यम से दातादीन जैसे भगवा पंडित का पर्दाफाश किया। एक तरफ धनिया को दातादीन कुलटा जैसे शब्द से सम्बोधित कर नारी के चरित्र को कंलित करता है, तो दूसरे तरफ दातादीन का लड़का जो कि लम्पट किस्म का एक चमारिन स्त्री के साथ अवैध संबंध बनाता है। यहाँ दोनो स्त्री को लाकर उपन्यासकार यह बताते है कि एक तरफ एक स्त्री को खुले आम चरित्रहीन होने का आरोप लगाया जा रहा है, तो इसकी दूसरी तरफ नीची जाति की स्त्री से शारीरिक संबंध बनाकर मान–प्रतिष्ठा से पुरुष समाज में रहता है। वही दूसरी तरफ त्याग पत्र में जैनेन्द्र कुमार की "मृणाल" व्यथा को बड़ी खूबी से उपन्यास में उकेरा है। "त्याग पत्र" मे दमित वासनाओं को चरम सीमा तक ले जाने का प्रयत्न किया जाता है। उपन्यासकार अपने पात्रों के माध्यम से जीवन संघर्ष इस तरह पेश करता उपन्यासकार के संबंध मे ज्योतिष जोशी कहते है कि:

> "कहना न होगा कि उपन्यास अपने स्थापत्य में जब सम्पूर्णता के साथ उभरकर आता है तो वह अपने उद्देश्य में सफल होता है, पर उसकी सफलता का अहम सूत्र उसकी दृष्टि में होता है। इस दृष्टि को हम प्रतिबद्ध कह आये है, लेखक को पक्षधरता उसकी भूमिका का नाम दे आए है। यह दृष्टि यानी उपन्यासकार का विजन जितना माननीय होगा, जितने बड़े संकल्प को लेकर चलेगा, उसका उपन्यास उतना ही बड़ा होगा।"[1]

जीवन संघर्ष में मानव समूह में स्त्री संघर्ष बड़ा ही दर्दनाक, पीड़ादायाक व सोचनीय है। इस पुरुष प्रधान देश में नारी को दहलीज तक सिमेटे हूए सारा समाज देखना चाहता है। ऐसा कोई भी नहीं है जो स्त्री को खुली हवा में सांस लेते हुए पुरी आजादी से जीने की मर्जी दे। नारी के लिए आज भी वह रेखा है जो समाज ने बनाये गये पुरुषों ने खीचा है। आजादी के बाद के दशक में प्रबुद्ध उपन्यासकारों ने नारी की पीड़ा का यथार्थ चित्रण किया है। यशपाल जी के उपन्यास में नारी को मात्र भोग की वस्तु होने की नियति का चित्रण किया है। नागार्जून ने रतिनाथ की चाची, बलयनमा, नयी पोधे आदि उपन्यासों में जीवित मृत होने की पीड़ा भुगतनी विधवाओं, अशक्त बूढ़ों के साथ विवाह बन्धन में बांध दी जाने वाली आठ–दस वर्ष की बालिकओं से अमानवीय व्यवहार आदि का सशक्त चित्रण उपन्यासकार ने अपने स्त्री पात्रों द्वारा उकेरा है।

उपन्यासकार ने मैंला आँचल में लक्ष्मी के चरित्र को मठों के महन्तों द्वारा स्त्री देह शोषण का मार्मिक अंकन किया है। डॉ. राजेन्द्र मिश्रा ने इस दृश्य का चित्रण करते हूए लक्ष्मी के सवांद को कुछ इस तरह व्यक्त करते है:

> "रामदास, हाथ छोड़ो। बैठो। आखिर तुम चित्रा को नहीं संभाल सके। माया ने तुम्हे अंधा कर दिया है।"[2]

उपन्यासकार ने नारी के मनोभावों को बड़ी सरलता व सहजता से उपन्यास मे उकेरा है। नारी पर हो रहे शोषण का सुला चित्रण रेणु जी ने मैला आँचल में दिखलाया है। यहॉ उपन्यासकार ने यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि जो भोगी लोग होते है वे प्रत्येक क्रियाकलाप का स्वयं उपभोग करता है और समाज में ऐसे जीता है मानों कोई पाप न किया हो। यहाँ रेखा जी ने धर्म के ठेकेदार ब्राहम्णों पर सीधा प्रहार किया है कि किस तरह दातादीन अपने बेटे के कुकर्म को छुपाता हुआ समाज में अपना रुतबा बनाये रखना चाहता है। स्त्री की पीड़ा व संघर्ष इतिहास के पन्नों में छपे हूए साफ दिखाई देते है कि स्त्री सिर्फ भोग्या है उसे समाज में पुरुषों की तरफ सम्मान से जीने का हक है। समाज के हर वर्ग में स्त्री की दशा कही न कही दबी कुचली पड़ी है। स्त्री को मानव न समझने वाले

पुरुष वर्ग स्त्रीयों को हमेशा उपभोग करने वाली वस्तु मात्र समझते है।

अपने पात्र के रुप में दिखाते हुए उनके शोषण उनके संघर्ष को उपन्यास का ने प्रारम्भ से अंत तक कही न कही क्रमशः दिखालाई देते है। संघर्ष के चक्र में पीसती स्त्रियाँ सदैव पुरुष नामक चक्की में पीसती हुये समाज की बनाई गई व्यवस्था का शिकार होती है।

निष्कर्ष

अन्ततः समाज में स्त्री की दशा सम्मानीय नही है उसे हर कदम में खुद को साबित करना पड़ता है। समाज के बनाये गये नियमों का पालन ना करें तब उसे दण्ड का भागीदार बनना होता है। स्त्री को समाज में अपना अस्तित्व बनाये के रखने के लिए संघर्ष करना ही होगा, तभी उनके जीवन की यात्रा सरल हो पायेगा, किंतु रास्ते इतने सरल भी नहीं है कि स्त्री को आसानी से रास्ते मिल जाये। उसका सफर, कठिन, तंग गलियों में पुरुषों के खींचते हूए हाथ उसे पीछे धकेलती हुऐ पीछे खींच ही लेते है, किंतु स्त्री की संघर्ष यात्रा अकेले ही करती है और अपने हिम्मत और हौंसला से सफर तय करती हुई अपनी संघर्षमय यात्रा पूरी करती है।

संदर्भ सुची

1. मिश्र, राजेन्द्र, *बीसवीं शताब्दी के चर्चित उपन्यासः : प्रकाशमल टी.एस. बिष्ट,* तक्षशिला प्रकाशन, 23/4761, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली, पृ. 93।
2. ज्योतिष, जोशी, (2007), *उपन्यास की समकालीनत,* प्रकाशमल भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली, प्रं.सं. 31।

****